शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी-मार्च 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

अनासक्त कर्मयोगी आचार्य बालविजय जी

(26 फरवरी 2026 को सौ वर्ष पूर्ण करने पर विशेष आलेख)

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

भारत को पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक अपने पैरों से पवित्र धरती को नापने वाले आचार्य विनोबा भावे ने अपने विचारों से हजारों युवाओं के दिलों में जगह बनायी। उनके सहयोग से भूदान-ग्रामदान-संपत्तिदान-सर्वोदय पात्र-शांति सेना-आचार्यकुल-खादी मिशन-गोरक्षा सत्याग्रह से अहिंसक समाज रचना की नींव को मजबूती प्रदान की। उन्हीं युवाओं में से एक श्री बालविजय जी अपने जीवन के सौ वर्ष पूरे कर रहे हैं। महाराष्ट्र के भंडारा में 26 फरवरी 1926 को जन्मे श्री बालविजय जी बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से एमएससी करने के बाद अपने लिए योग्य कार्य की तलाश में थे। पारिवारिक पृष्ठभूमि स्वतंत्रता सेनानियों की होने से उनके भीतर देशसेवा का बीज पड़ा हुआ था। उनके पिता श्री माधवराव टेंभेकर नागपुर के पास भंडारा में वकालत करते थे। श्री बालविजय जी को बाल्यकाल से ही अध्यात्म, देशभक्ति और पीड़ित-दुखियों की सेवा के संस्कार मिले। युवावस्था में यही संस्कार बलवान हो गए और उनके कदम संत विनोबा के भूदान आंदोलन की ओर बढ़ चले। सन् 1953 में विनोबा जी की भूदान यात्रा बिहार में चल रही थी। यहीं पर बालविजय जी की मुलाकात विनोबाजी से हुई। बालविजय जी की तलाश पूरी हुई। उन्होंने अपना जीवन विनोबा जी के आचार-विचारों को समर्पित कर दिया। आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का संकल्प लेकर बालविजय जी ने विनोबा जी के साथ पूरे देश में भूदान के लिए पदयात्रा की। भूदान की गंगा से निकले अहिंसक विचार को पल्लवित-पुष्पित करने वाली अनेक धाराओं को व्याख्यायित किया। जब संत विनोबा ने क्षेत्र संन्यास लिया, तब श्री बालविजय जी उनके निजी सचिव हुए। संत विनोबा ने खादी आंदोलन को नया मोड़ देने के लिए सन् 1981 में खादी मिशन बनाया, जिसका संयोजक श्री बालविजय जी को मनोनीत किया। विनोबा जी के ब्रह्मनिर्वाण (15 नवंबर 1982) तक बालविजय जी छाया की तरह उनके साथ रहे।

जब देश के पूर्वोत्तर प्रांत असम में हिंसा फूट पड़ी, तब श्री बालविजय जी इससे भीतर तक आहत हो गए। उनके करुणापूर्ण हृदय ने हिंसा शमन के लिए असम जाने का संकल्प लिया। वहां पर आदिवासियों और मुसलमानों के संघर्ष में भीषण नरसंहार हुआ था। विद्यार्थियों का आंदोलन भी चल रहा था। श्री बालविजय जी ने अपने स्थानीय साथियों के साथ परस्पर विश्वास का वातावरण बनाने और शांति स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। पंजाब में भी स्थिति अत्यंत नाजुक थी। ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार के बाद पंजाब में तनावपूर्ण स्थिति निर्मित हुई। संत विनोबा ने निर्भय निर्वैर और निष्पक्ष समाज रचना के लिए आचार्यकुल की स्थापना की, जिसके अध्यक्ष श्री बालविजय जी थे। पंजाब में शांति और सद्भाव के लिए आदमपुर में अखिल भारतीय आचार्यकुल सम्मेलन का आयोजन किया गया। पंजाब के युवकों और समाजजनों से बातचीत करके उन्हें संबल प्रदान किया।

श्री बालविजय जी ने देश में शांति और सद्भावना कायम करने के लिए सन् 1985 में विनोबा समाधि पवनार से गांधी समाधि राजघाट दिल्ली तक प्रबोधन पदयात्रा की। इस पदयात्रा में ब्रह्मविद्या मंदिर पवनार की सुश्री रेखा बहन, सुश्री रम्मू बहन, सुश्री ज्योति बहन, सुश्री

सोनाली बहन उनके साथ थीं। मध्यप्रदेश में पदयात्रा के प्रवेश करने पर सर्वश्री नरेंद्र दुबे, गंगाधर उमराव पाटणकर, पुष्पेंद्र दुबे आदि जुड़ गए। इस पदयात्रा से शहरी और ग्रामीण समाज तक विनोबा जी के विचारों को पहुंचाया गया।

अब तक श्री बालविजय जी अनथक पदयात्री का रूप ले चुके थे। देश के हरेक अशांत क्षेत्र से उन्हें आवाज दी जाती और वे स्वयं को रोक नहीं पाते। सन् 1987 में बंगाल में जबरदस्ती भूमि अधिग्रहीत करने का सिलसिला बड़े पैमाने पर चला। लोग भयभीत और त्रस्त थे। बंगाल के मित्रों ने श्री बालभाई से समस्या के समाधान का निवेदन किया। तब श्री बालभाई ने अशांति शमन के लिए भारत के छोर गंगासागर से बांकुड़ा तक पदयात्रा की। भूमि समस्या के समाधान के लिए विनोबा जी के विचारों को लोगों तक पहुंचाया देश में बढ़ती हिंसा, उग्रवाद, आतंकवाद, भ्रष्टाचार और नैतिक मूल्य के पतन से देशवासी चिंतित हो उठा। इसका निराकरण केवल पुलिस या सैन्यशक्ति से नहीं हो सकता। आम जनता ही परिस्थितियों में बदलाव कर सकती है। इसलिए आम जनता में प्रवेश करना आवश्यक है, ऐसा महसूस करते हुए श्री बालभाई ने भारत यात्रा का कार्यक्रम बनाया। जयजगत फाउंडेशन के अध्यक्ष के नाते श्री बालभाई ने 2 अक्टूबर 1994 से 2 अक्टूबर 1997 तक तीन साल जयजगत मैत्री यात्रा की। इस यात्रा का प्रारंभ चीन की सीमा के निकट करीब 11 हजार फीट की ऊंचाई पर बसे तवांग गांव से हुआ। यह यात्रा सभी प्रदेशों और पड़ोसी देश नेपाल से होती हुई महात्मा गांधी की तपोभूमि सेवाग्राम पहुंची जहां इसका समापन हुआ। इसमें देश के सभी प्रदेशों के युवा उपस्थित हुए। लगभग 1 लाख 20 हजार किलोमीटर की यात्रा में करीब 4000 ब्लॉक्स में संपर्क हुआ।

पूर्वोत्तर में जिन युवाओं को आतंकवादी अथवा उग्रवादी माना जाता था, उनसे खुलकर बातचीत हुई। उनके नेतृत्व में समस्या के समाधान के अनेक प्रयास किए गए। श्री बालभाई बाहर से भले ही कर्म में में लगे दिखाई देते हों, लेकिन भीतर से पूरी तरह अनासक्त हैं। उन्होंने पीड़ित और दुखियों की सेवा के निमित्त से ही संस्था-संगठनों में भागीदारी की। संत विनोबा जी द्वारा ग्रामस्वावलंबन के निमित्त से बनायी गयी ग्राम सेवा मंडल के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग और खादी संस्थाओं के मध्य संवाद कायम करने, विनोबा जी के ग्राम स्वराज्य के लिए स्वावलंबी खादी के सूत्र को धरातल पर उतारने के लिए विगत चालीस दशकों से देश की खादी संस्थाओं को मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। उनके नेतृत्व में चलाए गए खादी रक्षा अभियान ने मरणासन्न खादी संस्थाओं को जीवनदान दिया है। उनकी आध्यात्मिक दृष्टि संपन्न चेतना से रचनात्मक कार्य को हमेशा गति मिलती रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ में श्री बालभाई ने 'विनोबा और अहिंसा' विषय पर उद्बोधन दिया। श्री बालभाई ने अहिंसा समवाय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसे अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

श्री बालभाई की अहर्निश सेवाओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए मध्यप्रदेश शासन ने वर्ष 1998 में उन्हें महात्मा गांधी अवार्ड से सम्मानित किया। उन्हें महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण अवार्ड भी दिया गया। उन्हें अपने जीवनकाल में जितने भी सम्मान और सम्मान राशि मिली, वे सब संस्था-संगठनों को समर्पित कर दिए। श्री बालभाई ने संत विनोबा की प्रसिद्ध मराठी पुस्तक 'गीताई' का हिन्दी में अनुवाद किया। उन्होंने विनोबा जी की ब्रह्मनिर्वाण प्रक्रिया को समझने और समझाने के लिए 'विनोबा का ब्रह्मनिर्वाण' पुस्तक का प्रणयन किया। अपने यशस्वी जीवन के सौ वर्ष पूर्ण करने पर देश के समस्त रचनात्मक कार्यकर्ता उन्हें आदरांजलि प्रदान करते हैं। श्री बालभाई अपनी सजग चेतना से देश के खादी सेवकों को ऊर्जा से निरंतर भर रहे हैं। उन्हें शत् शत् नमन्।